अ नु क्र म णि का

पृष्ठ क्रमांक

अध्याय : 1 - अज्ञेय : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व 1 - 28

1· प्रस्तावना

2· हिन्दी साहित्य में अज्ञेय का योगदान

3· जीवनवृत्त

जन्म तथा बचपन

माता-पिता

शिक्षा

नौकरी

विवाह

ग्राहैस्थ जीवन

स्वभाव

मृत्यु

4· व्यक्तित्त्व

5· कृतित्त्व

काव्य संकलन

सम्पादित काव्य संकलन

उपन्यास

कथा संकलन

नाटक

निबंध एवं विचारात्मक गद्य
यात्रा संस्मरण
पत्रकारिता
अंग्रेजी में लेखन
विशिष्ट पुरस्कार

6· साहित्यिक व्यक्तित्त्व

7· प्रेरणा एवं प्रभाव

8· अज्ञेय के उपन्यासों का वैशिष्टय
शेखर एक जीवनी
नदी के द्वीप
अपने अपने अजनबी

9· उपन्यासों में जीवन दर्शन
जीवन दर्शन
अज्ञेय के उपन्यासों में जीवन दर्शन की विविधताएँ

निष्कर्ष

अध्याय : 2 - अपने अपने अजनबी : कथा सौष्ठव 29 - 68

1· भूमिका

2· कथा परिचय
योके और सेल्मा
सेल्मा
योके

3· कथावस्तु का मूल्यांकन
कथा में वस्तुविधान की उत्कृष्टता
कथा में प्रायोगिक नव्यता की प्रधानता
मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की चेतना प्रवाह पध्दति
कथा का प्रारम्भ, विकास और उपसंहार
विविध प्रणालियों का सफल प्रयोग
अन्य विशेषताएँ
मौलिकता
मनोरंजकता

सत्यता
सम्बध्दता एवं निर्माण कौशल
स्वाभाविकता
व्यापकता

निष्कर्ष

अध्याय : 3 - अपने अपने अजनबी : पात्र संरचना 69 - 96

1· भूमिका
2· अपने अपने अजनबी के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण

सेल्मा
कुण्ठित व्यक्तित्त्व
कैंसर से पीडित सेल्मा
स्वार्थी लोलुप एवं चतुर व्यवसायी
दंभी सेल्मा
पुरूषों के प्रति ईर्ष्या रखनेवाली
अहंपूर्ण एवं आत्मकेन्द्रित नारी
पराजित सेल्मा
निर्भय सेल्मा
अतिथि धर्म का पालन करनेवाली
भगवानपर अधिक आस्था रखनेवाली

योके
साहसी युवती
द्वन्द्वात्मक व्यक्तित्त्ववाली योके
आन्तरिक संघर्ष
प्रेमिका योके
भय, संशय एवं रोष के भाव से ग्रस्त योके
मृत्यु से डरनेवाली
व्यवहार कुशल
स्वच्छंद प्रकृति की युवती योके
प्रबल विरोध की भावना तथा आत्मग्लानि
अनिश्वरवादी दृष्टिकोण
जर्मन सैनिकों से कलंकित

3· मूल्यांकन

4· विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग

निष्कर्ष

अध्याय : 4 - अपने अपने अजनबी : कथोपकथन 97 - 117

1· भूमिका

2· मूल्यांकन

कथानक का विकास में सहायक कथोपकथन
पात्रों का चरित्रांकन में सहायक कथोपकथन
लेखक के मंतव्य को स्पष्ट करनेवाले संवाद या कथोपकथन
नूतन संवाद प्रणालियों का प्रयोग

3· कलात्मकता
संक्षिप्तता
पात्रों की मनःस्थिति की अनुकूलता
नाटकीयता एवं मार्मिकता
प्रसंग, घटना एवं वातावरण की उपयुक्तता
उद्देश्यानुकूलता

निष्कर्ष

अध्याय : 5 - अपने अपने अजनबी : भाषाशैली 117 - 138

1· प्रस्तावना

2· भाषा

3· भाषा का स्वरूप

तत्सम शब्द
तद्भव शब्द
स्थानीय या देशज शब्द

4· भाषा सौन्दर्य

प्रौढता एवं समर्थता
पात्र एवं प्रसंगानुकूल भाषा

विवेचनात्मकता
जटिलता और संकेतात्मकता
सारगर्भित एवं उक्तिपूर्ण भाषा
अलंकारिकता
मुहावरे एवं सूक्तियाँ
वाक्य विन्यास

5. विभिन्न शैलियों का प्रयोग

वर्णनात्मक शैली
मनोविश्लेषणात्मक शैली
तर्क वितर्कमयी या विश्लेषणात्मक शैली
नाटकीयता मिश्रित भावात्मक शैली
डायरी शैली

निष्कर्ष

अध्याय : 6 - अपने अपने अजनबी : नामकरण 139 - 150

1. भूमिका
2. नामकरण के आधार
3. "अपने अपने अजनबी" के नामकरण की सार्थकता

निष्कर्ष

अध्याय : 7 - अपने अपने अजनबी - अस्तित्ववादी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में 150 - 191

1. भूमिका
2. अस्तित्ववाद क्या है?
3. अस्तित्ववादी विचारधारा के तत्त्व
4. "अपने अपने अजनबी" में अस्तित्ववादी विचाराधारा का चित्रण

अस्तित्वबोध की तीव्र आकांक्षा और अहं

अस्तित्त्व की नाशक मृत्यु
मृत्यु की आशंकाजन्य त्रास, जिज्ञासा की विवशता
एवं घोर निराशा
परपीड़न में सुखानुभूति
जीने की प्रबल आकांक्षा
मानसिक परिताप, क्षण का महत्त्व एवं एकाकीपन
का भाव
अजनबीपन की प्रतीति
जीवन-सम्बन्धी दृष्टिकोण
ईश्वर और मृत्यु विषयक दृष्टिकोण

5· "अपने अपने अजनबी" में अस्तित्त्ववादी जीवन दृष्टि

कालानुभव संबंधी धारणा का स्पष्टीकरण
मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या
अस्तित्त्ववाद की स्थापना

निष्कर्ष

<u>अध्याय : 8</u> - <u>उपसंहार</u> 192 - 198

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u> 199 - 201